अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में चित्रित मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक वर्तमान राजनीति परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' एक प्रतीकात्मक नाटक है। समीक्षा कीजिए।

5. 'सूखी डाली' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'तीन अपाहिज' एकांकी का विश्लेषण कीजिए।

5 Dec

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4076 **C**

05 DEC 2022

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) छोटे चित्त भीरू बुद्धि मन चंचल बिगत उछाह।
उदर-भरन-रत, ईस विमुख सब भए प्रजा नरनाह॥
इनसों कछु आस नहिं ये तो सब विधि बुद्धि-बलहीन।
बिना एकता बुद्धि-कला के भए सबहि विधि दीन॥

munotes.in

अथवा

हा! भारतवर्ष को ऐसी मोहानिद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान बूझकर सोता है उसे कोन जगा सकेगा? हा दैव। तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँक उधार लगवाता है।

(ख) शास्त्रों में अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह की बातें मिल सकती है परन्तु जिस प्रथा के लिए विधि और निषेध दोनों तरह की सूचनाएँ मिले, तो इतिहास की हि से वह उस काल में सम्भाव्य मानी जाएँगी। हाँ, समय-समय पर उनमें विरोध और सुधार हुए होंगे और होते रहेंगे। मुझे तो केवल यही देखना है कि इस घटना की संभावना इतिहास की दृष्टि से उचित है कि नहीं।

अथवा

अर्थ! आप बोलते क्यों नहीं? आप धर्म के नियामक जिन स्त्रियों को धर्मबन्ध में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार-कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपति में अवलम्ब मांग सकें? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं?

(ग) कौन कसूर भइल हमसे मैया
बिरवा गइल मुरझाय हो,
सींचत सींचत उसर सिरानी
नेकु नहीं हरिआय हो।
आपन खून पिरनवा न साथी
अंसुअन केहि पतिआय हो।

अथवा

सरदार साहब, राजा साहब, बाबू साहब, सबके साथ यही दिक्कत है। कम्बख्त जीवन की कला नहीं जानते; प्रियमान-से, निहत्थे फैजियों की तरह यह मौत तक खिसकते तक खिसकते जाते हैं, जब उन्होंने देखा कि मैं उन से भीख नहीं माँगता, उनके तलबे नहीं सहलाता, ग्रह नहीं बनाता, षड्यंत्र नहीं करता तो मुँह बा कर रह गये। जी हाँ, मुँह बा कर रह गये।

2. भारत दुर्दशा नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर भारत दुर्दशा का विश्लेषण कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नायिका प्रधान नाटक है। समीक्षा कीजिए। (12)